अध्याय पंचम

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 समस्या का कथन

5.3 उद्देश्य

5.4 परिकल्पना

5.5 न्यादर्श

5.6 उपकरण

5.7 सांख्यिकीय विधियाँ

5.8 शोध के चर

5.9 निष्कर्ष

5.10 सुझाव

अध्याय पंचम

शोधसार निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना –

परिवार का व्यक्ति के जीवन तथा व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसमें व्यक्ति का स्वास्थ्य, शीलगुण एवं समायोजन पर विशेष प्रभाव पड़ता है। इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति परिवार में ही समय व्यतीत करता है। परिवार के सदस्यों का व्यक्ति के व्यवहार पर काफी नियंत्रण होता है तथा परिवार के सदस्यों के बीच काफी संवेगात्मक संबंध मजबूत होते है। परिवार का व्यक्ति के शारीरिक विकास एवं मानसिक विकास पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूप से प्रभाव पड़ता है।

परिवार के कुछ खास पहलू में से क्रमसूचक स्थान का व्यक्ति के विकास पर प्रभाव पड़ता है। क्रमसूचक स्थान का तात्पर्य परिवार में माता–पिता को जब संतान पैदा होते है। वह संतान एक या एक से ज्यादा होता है। उनका जन्म लेने का क्रम को जन्मक्रम कहा है। यह जन्मक्रम का व्यक्ति के शीलगुण जैसे स्वालंबन, परावलंबन, वर्चस्ववृत्ति, आक्रमकता, दयालू आदि गुणों पर प्रभाव पड़ता है।

परिवार में अपने जन्मक्रम के अनुरूप प्रत्येक बच्चा द्वारा की गयी भूमिका का प्रभाव उसके जीवन शैली पर पड़ता है। इतना ही नहीं, परिवार के अन्य सदस्य उससे क्या उम्मीद करते है या किस तरह की भूमिका या कार्य करने की उम्मीद करते हैं। इस कारण से बच्चे के व्यवहार में परिवर्तन आता है। इस प्रत्याशाओं के अनुरूप अपने आप को मोड़कर बच्चे अपने में परिवर्तन लाता है तथा महत्वपूर्ण समायोजन करता

है। जब बच्चे परिवार में समरूपता दिखाने में असमर्थ होते हैं, तो उसमें चिन्ता, द्वेष आक्रमकता तथा असमायोजन हो जाता है।

5.2 समस्या का कथन –

"विद्यार्थियों के जन्मक्रम के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन"।

5.3 अनुसंधान के उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों का जन्मक्रम ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. जन्मक्रम एवं शैक्षिक उपलब्धि में अंतर जानना।
4. विद्यार्थियों का समायोजन ज्ञात करना।
5. जन्मक्रम एवं समायोजन का अंतर जानना।
6. शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का संबंध जानना।
7. जन्मक्रम के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन का संबंध जानना।

5.4 परिकल्पना:–

1. जन्मक्रम और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. जन्मक्रम और समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
4. लिंग के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. लिंग के अनुसार समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.5 न्यादर्श :–

प्रस्तुत अनुसंधान के लिये 8वीं कक्षा के छात्र हेतुपूर्वक यादृच्छिक विधि से 60 छात्रों का चयन किया गया। जिसमें 30 लड़के और 30 लड़कियाँ है। यह छात्र मध्यम वर्गीय कुटूम्ब के थे।

5.6 उपकरण –

AISS- (*Adjustment Inventory for school students*)

डॉ. ए.के.पी. सिन्हा

डॉ. आर.पी.सिंग

यह मानकीकृत उपकरण है इस परीक्षण से समायोजन के तीन क्षेत्रों का मूल्यांकन किया जाता है। संवेगात्मक समायोजन सामाजिक समायोजन और शैक्षिक समायोजन इस क्षेत्र का मूल्यांकन किया जाता है। इस परीक्षण में कुल मिलाके 60 पद है, हाँ/नहीं इस प्रकार के है।

5.7 सांख्यिकीय विधियाँ –

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, प्रसरण विश्लेषण 't' परीक्षण, 'F' परीक्षण और कार्ल पियरसन का गुणक आघूर्ण सहसंबंध सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

5.8 शोध के चर –

स्वतंत्र चर –

लिंग	–	लड़के, लड़कियाँ
जन्मक्रम	–	प्रथम जन्मक्रम
		बीच का जन्मक्रम

अंतिम का जन्मक्रम

आश्रित चर – – शैक्षिक उपलब्धि

समायोजन–

5.9 निष्कर्ष –

प्रस्तुत लघुशोध में सांख्यिकीय का उपयोग करते हुये न्यादर्श के प्रदत्तो का संकलन एवं विश्लेषण करने के पश्चात निम्न निष्कर्ष किये गये।

1. जन्मक्रम एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. जन्मक्रम और समायोजन में कोइ सार्थक अन्तर नही है।
3. शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
4. लड़के और लड़कियो मे शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है।
5. लड़के और लड़कियो में समायोजन में कोई अन्तर नही है।

5.10 सुझाव –

1. क्या आदिम जाति प्रजाति का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर होता है ?
2. आत्म प्रत्यय का शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन पर होने वाले परिणामो का अध्ययन।
3. छात्रो का समायोजन- एक गहन अध्ययन ''
4. बालको का जन्मक्रम और व्यक्तित्व प्रकार का अध्ययन ।
5. जिवन मूल्य तथा लाईफ केरियर पर प्रभाव का अध्ययन।
6. शालेय, कौटुबिक वातावरण का समायोजन पर होने वाले परिणामो का अध्ययन।

7. कौटुबिक वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि का सहसंबन्धात्मक अध्ययन।

8. संवेगात्मक बुद्धिमता का समायोजन ,शैक्षिक उपलब्धि पर होने वाले परिणामो का अध्ययन''।